क्रियायोग अनुसन्धान संस्थान

संचालन द्वारा: योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति
संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569243
मोबाइल: 9415217277/81
ई-मेल:yogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर.ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेल: kriyayoga.canada@yahoo.ca

बेवसाइटः kriyayoga-yogisatyam.org

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 313 वाँ वर्ष है

क्रम संख्या.....

दिनाँक.....

प्रकाशनार्थ

7 फरवरी, 2013 महाकुंभ क्षेत्र में मुक्ति मार्ग पर क्रियायोग का विशेष कार्यक्रम

''क्रियायोग उच्चतम् शिक्षा– स्वामी श्री योगी सत्यम्''

7 फरवरी 2013 इलाहाबाद । मुक्ति मार्ग पर सेवारत क्रियायोग शिविर में अन्तर्राष्ट्रीय संत स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने स्पष्ट किया कि समस्त सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याओं के निराकरण के लिए शिक्षा नीति में परिवर्तन आवश्यक है । आज ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिसमें कथनी और करनी के बीच दूरी शून्य हो । वर्तमान शिक्षा प्रणाली में हम पढते कुछ हैं और करते कुछ और हैं । अगर चिकित्सा विज्ञान और इंजीनियरिंग विज्ञान को शिक्षा से हटा दिया जाय तो अन्य समस्त शिक्षा प्रणाली अपूर्ण है । आज उस शिक्षा की आवश्यकता है जिसमें शिक्षित होने पर विद्यार्थी स्वयं रोजगार का केन्द्र बन जाय । उसे रोजगार ढूढने की आवश्यकता न पडे बल्कि वह अपने अंदर विद्यमान अनन्त ज्ञान के द्वारा अन्य सभी को रोजगार प्रदान कर सके । शिक्षा जगत में पढकर, लिखकर और याद करके हू बहू लिखने की परम्परा, शिक्षा की अपूर्णता को व्यक्त करता है । शिक्षा में क्रियात्मक ज्ञान का समावेश अति आवश्यक है । आज लिखकर, पढकर, याद करने नहीं बल्कि लिखे, पढे गये तथ्य को अनुभव करके उसका ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आगे कहा कि सत्य को लिखकर, पढकर, व्यक्त करके नहीं बल्कि अनुभूति करके जानने की आवश्यकता है तथा यही सच्ची शिक्षा है । अगर हम शिक्षा प्रणाली में जो कुछ पढे हैं उसकी क्रियात्मक अभिव्यक्ति नहीं कर सकते हैं तो वह शिक्षा

क्रियायोग का विश्वव्यापी प्रसार एक ऐसे अखण्डित विश्व का सूत्रपात करेगा
जिसके शासक स्वयं परमचैतन्य परमात्मा होंगे ।

अधूरी है । उसके द्वारा कभी भी राष्ट्र उत्थान संभव नहीं है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आगे स्पष्ट किया कि सच्ची शिक्षा वह है जिससे सत्य क्या और असत्य का ज्ञान प्राप्त होता है । आध्यात्मिक जगत में निहित समस्त साधनाएँ ध्यान, तप, व्रत, नाम जप, उल्टा नाम जप, तंत्र साधना, मंत्र साधना, यज्ञ, उपनयन संस्कार, शिव पूजा, उपासना, कर्म योग, भक्ति योग, ज्ञान योग, लय योग, भक्ति, सुमिरन, गायत्री मंत्र आदि का वास्तविक स्वरूप क्या है ? का ज्ञान प्राप्त करने के लिए क्रियायोग ध्यान अति आवश्यक है । क्रियायोग के अभ्यास से साधक के अंदर अतीन्द्रिय दृष्टि प्रकाशित हो जाती है जिससे वह समस्त शब्दों, विचारों, भावों में निहित सत्य और असत्य का ज्ञान प्राप्त कर लेता है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने क्रियायोग का अभ्यास करते हुए कहा कि क्रियायोग एक पूर्ण शिक्षा है जिसके अभ्यास से साधक के अंदर सुषुप्त अनन्त ज्ञान का जागरण होने लगता है । ऐसी अवस्था में वह जो कुछ बोलता है वह शास्त्र बन कर अनन्त काल के लिए अमर हो जाता है । उसके अंदर से निकलने वाले ज्ञान प्रवाह की धारा गंगा की तरह पावन होती है तथा वह जहॉ जहॉ प्रवाहित होती है वहॉ अलौकिक आत्माओं का समागम होने लगता है । संत रविदास ने कहा है मन चंगा तो कटौती में गंगा । अगर मन पूर्ण निर्मल और पवित्र है तो साधक का स्वरूप गंगा हो जाता है । क्रियायोग ध्यान के द्वारा मन के अँधेपन का दूर होना ही मन की निर्मल अवस्था प्रकट होना है । ऐसी अवस्था में साधक के अंदर गंगा प्रवाहित होने लगती हैं जिससे वह पूर्ण निर्मल और निर्विकार अवस्था की प्राप्ति कर लेता है । मात्र गंगा में स्नान से पर्याप्त पुण्य का लाभ नहीं प्राप्त होता है । असली पूर्ण पुण्य तब मिलता है जब साधक क्रियायोग ध्यान के द्वारा स्वरूप को पावन गंगा में रूपान्तरित करके अन्तःकरण के अमर ज्ञान प्रवाह में प्रतिपल स्नान करके निर्मलता की अनुभूति करे ।

अन्तःकरण की गंगा, संगम, त्रिवेणी में स्नान करना ही ईश्वरानुभूति का मार्ग है और यही वास्तविक शिक्षा है । स्वामी जी ने स्पष्ट किया कि परमात्मा में भक्ति उच्चतम् शिक्षा है परन्तु भक्ति बढाने की प्रचलित परम्परा अपूर्ण है । उस विधि से भक्ति बढाने पर बहुत अधिक परिश्रम करने पर आंशिक उपलब्धि प्राप्त होती है । क्रियायोग ध्यान परमात्मा में भक्ति बढाने का सरलतम्, श्रेष्टतम्, पूर्ण, आध्यात्मिक, वैज्ञानिक मार्ग जिसमें साधक जेट विमान की तरह तीव्र गति से परमात्मा की तरफ यात्रा करता है । क्रियायोग की साधना से साधक एक ही जीवन काल के 6, 12, 24, 36, 48 ..... आदि वर्षों में उस पूर्ण ज्ञान की अनुभूति कर लेता है जिसे

सामान्य रूप में प्राप्त करने में 10 लाख वर्ष व्याधिरहित जीवन की आवश्यकता पडती है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने क्रियायोग प्रशिक्षण के दौरान आहार विज्ञान के वैज्ञानिक स्वरूप को एल0सी0डी0 प्रोजेक्टर के द्वारा विस्तारपूर्वक स्पष्ट किया । मुक्ति मार्ग पर स्थित क्रियायोग शिविर के भव्य पण्डाल में भारत के अनेक प्रदेशों से आये हुए भक्तों के साथ–साथ अमरीका, कनॉडा, ब्राजील, रूस, गयाना, सिंगापुर, पोलैण्ड, आस्ट्रेलिया, फिनीलैन्ड, साउथ अफ्रीका, जर्मनी, इटली, लंडन आदि देशों से आये हुए साधक भारी संख्या में भाग लेकर शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं ।

क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम प्रतिदिन कुम्भ मेला क्षेत्र में काली मार्ग पर प्रातः 6:30 से 7:30 बजे तक, कुम्भ मेला में मुक्ति मार्ग पर प्रातः 8 बजे से 10 बजे तक तथा दोपहर 2:30 बजे से सायं 6 बजे तक और मोरी रोड पर महर्षि पतंजलि धाम परिसर में रात्रि 11 बजे से 1 बजे तक हिन्दी तथा ॲग्रजी भाषा में बडे ही प्रभावशाली रूप में चल रहा है ।

– योगमाता